दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ | नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16 - 07 - 2017 / I

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तम प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 145   टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) पहाड़ी हिंदी

पहाड़ी हिंदी से तात्पर्य उत्तराखण्ड में बोली जाने वाली भाषा से है। पहाड़ी हिंदी के अंतर्गत - 'कुमाऊँनी' और 'गढ़वाली' को सम्मिलित किया जाता है।

पहाड़ी हिंदी 'ओकारबहुल' भाषा है। जैसे - तारो, मारो इत्यादि। पहाड़ी हिंदी के अंतर्गत 'अ' एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के लिए कुमाऊँनी में 'न' का प्रयोग और गढ़वाली में 'ऊं' का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

घोड़ो - घोड़न (कुमाऊँनी)
घोड़ो - घोड़ूँ (गढ़वाली)

पहाड़ी हिंदी में भविष्य काल के लिए 'ल' इति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का प्रयोग किया जाता है। जबकि भूतकाल का व्यवहार करने के लिए ब्रज भाषा के समान ही चल्यो, खायो इत्यादि का प्रयोग मिलता है।

पहाड़ी हिंदी पर राजस्थानी हिंदी का भी प्रभाव मिलता है। इसलिए इसमें 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग किया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम मुगल दरबार में रहते थे। इन्होंने अवधी एवं ब्रज दोनों में रचनाएँ की। 'नायिका बरवै भेद' उनकी अवधी की और 'दोहावली' ब्रज भाषा में लिखी गई रचना है। 'मदनाष्टक' में उनके खड़ी बोली हिंदी के स्पष्ट प्रमाण ~~प्रमाण~~ मिलते हैं।

रहीम की रचनाओं में भाषा या व्याकरण के स्तर पर खड़ी बोली के चिन्ह सीमित मिलते हैं, किंतु पदों के स्तर पर व्यापक चिन्ह मिलते हैं। उदाहरण के लिए -

"रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी बिनु न उबरे, मोती मानुष चून।"

रहीम की 'मदनाष्टक' में व्याकरण एवं ब्रज दोनों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही स्तर पर खड़ी बोली के प्रमाण मिलते हैं। उदाहरण के लिए -

"पकरि परम प्यारे सांवरे को मिलाओ,
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ।"

पकरि, परम, प्याला इत्यादि में इकारान्त, अकारान्त और आकारान्त जैसे तत्व मिलते हैं, जो कि खड़ी बोली में भी देखने को मिलते हैं।

अतः स्पष्ट है कि रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिंदी के तत्व देखे जा सकते हैं।

Good 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

जायसी के काव्य में अवधी का ~~जैसे~~ जैसा माधुर्य, ठेठपन देशीपन देखने को मिलता है, उसी को ~~देख~~ लेकर साहित्येतिहास लेखकों ने जायसी को 'अवधी का अरघान' कहा है।

वस्तुत: जायसी ने अपनी रचनाओं में अवधी में प्रचलित लोक कथाओं को स्वीकार किया। इन कथाओं का ~~के~~ अवधी भाषा में ऐसा वर्णन किया कि भाषा अपना ठेठपन एवं देशीपन खोए बिना लोक संस्कृति से जुड़ जाती है। उदाहरण के लिए - जायसी ने 'दंवगरा' शब्द का प्रयोग किया, जिसका तात्पर्य अवधी में बसंत की पहली वर्षा से होता है। इस शब्द के प्रयोग से पूरी की पूरी लोक संस्कृति का वर्णन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो गया।

हो साथ ही जायसी ने अपनी रचना 'पद्मावत' में संस्कृत के शब्दों का अवधीकरण कर दिया जैसे - वन को बन, पृथ्वी को पुहुमी इत्यादि बना दिया।

जायसी ने अवधी के लोकोक्तियों और मुहावरें का प्रयोग किया जैसे 'हिय फटा' और 'सीधी अंगुरी न निकले घियू'।

अतः स्पष्ट है कि जायसी ने अवधी में लोक संस्कृति के तत्वों को उभारा अतः उन्हें अवधी का आधार कहना अतिशयोक्ति नहीं है।

Good 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

प्राकृत भाषा के पश्चात अपभ्रंश का विकास माना जाता है। कुछ ~~विद्वान~~ साहित्यकार मानते हैं कि अपभ्रंश के भेद नहीं हैं बल्कि इसका देवनागरी से क्रमिक विकास हुआ है। मार्कण्डेय जैसे साहित्येतिहास लेखक अपभ्रंश में कोई भेद ~~नहीं~~ मानते हैं।

मार्कण्डेय के अनुसार अपभ्रंश के तीन भेद हैं-
- नागर अपभ्रंश
- उपनागर अपभ्रंश
- ब्राचड़ अपभ्रंश

अनेक अन्य हिंदी लेखकों ने भी मार्कण्डेय के कथन से सहमति व्यक्त की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किंतु कुछ अन्य साहित्येतिहास लेखकों ने अपभ्रंश के दूसरे भेद स्वीकार किए हैं जैसे -

- मागधी अपभ्रंश
- अर्द्धमागधी अपभ्रंश
- शौरसैनी अपभ्रंश

यह विभाजन भौगोलिक आधार पर एवं उनकी प्रवृत्तियों के आधार पर किया है।
अर्द्धमागधी अपभ्रंश का संबंध पूर्वी हिंदी से जबकि शौरसैनी अपभ्रंश का पश्चिमी हिंदी से देखा जा सकता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी भाषा क्षेत्र से तात्पर्य हिंदी का भाषा के रूप में प्रयोग किए जाने वाले क्षेत्र से है।

वस्तुतः हिंदी का ~~उत्तरी~~ भाषा क्षेत्र भारत के उत्तरी क्षेत्र - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड इत्यादि में है। इस क्षेत्र में हिंदी प्राथमिक भाषा के रूप में उपयोग की जाती है।

लेकिन यदि देखा जाए तो हिंदी भाषा का विस्तार सम्पूर्ण भारत में है। दक्षिण भारतीय भाषाओं - तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम इत्यादि का जन्म आर्य भाषा से माना जाता है। और इन भाषाओं पर हिंदी का प्रभाव स्पष्ट नजर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आता है।

इसके अतिरिक्त उत्तर - पूर्वी भारत, मराठी, सिंधी, उड़िया, बांग्ला इत्यादि का जन्म भी आर्य भाषा से माना जाता है, इसलिए इनमें भी हिंदी की प्रवृत्तियां देखने को मिलती है।

अतः स्पष्ट है कि उत्तर भारत में हिंदी प्राथमिक भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। किंतु हिंदी भाषा को संपूर्ण भारत में समझा जाता है।

5/10

विदेशों में भी बतायें।

4a

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रज और अवधी का विकास दो अलग - अलग आर्य भाषाओं से हुआ। जहाँ ब्रज का विकास 'शौरसेनी अपभ्रंश' से तो वहीं ~~अव~~ ~~अवध~~ 'अवधी' का विकास अर्ध मागधी अपभ्रंश से माना जाता है। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि इसमें भिन्नता के बिंदु स्पष्ट होंगे, किंतु भौगोलिक निकटता के कारण इनमें समानता देखने को भी मिलती है।

ब्रज का क्षेत्र ब्रजमण्डल जैसे - मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद इत्यादि में विस्तारित है, तो वहीं अवधी का क्षेत्र, फैजाबाद, इलाहाबाद, प्रतापगढ़ इत्यादि क्षेत्र में विस्तारित है।

ब्रज 'ओकारबहुल भाषा' है जबकि अवधी उकारबहुल भाषा। उदाहरण के लिए ⇒

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम > रामो (ब्रज)
राम > रामु (अवधी)

ब्रज में संज्ञा का एक ही रूप मिलता है जबकि अवधी में संज्ञा के तीन रूप मिलते है जैसे - लरका, लरकवा, लरिकउना इत्यादि।

ब्रज में संप्रदानार्थ कर्ता के लिए 'नै' परसर्ग का प्रयोग होता है, जबकि अवधी में कर्ता के लिए किसी परसर्ग का उपयोग नहीं होता।

ब्रज में पुलिंग को स्त्रीलिंग में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे - सखा > सखी। जबकि अवधी में 'इया' प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे - बहनिया इत्यादि।

ब्रज में एकवचन से बहुवचन में परिवर्तित करने के लिए 'ऑ' प्रत्यय का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रयोग होता है जैसे सखियाँ, तो साथ ही कहीं - कहीं 'न' और 'अन' का भी प्रयोग देखने को मिलता है जबकि अवधी अनुनासिक का प्रयोग कर बहुवचन बनाया जाता है, तो वहीं 'न्ह' का प्रयोग भी बहुवचन बनाने के लिए किया जाता है जैसे- 'सखिन्ह'।

अवधी में संबंध कारक के लिए केर, केरा, केरी इत्यादि का प्रयोग किया जाता है, किंतु कहीं कहीं का, की, के, का भी प्रयोग मिलता है। जबकि ब्रज में मुख्यतः का, की, के, का ही प्रयोग किया जाता है, किंतु कहीं - कहीं, अवधी से निकटता के कारण केर, केरा, केरी का प्रयोग मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी में भविष्यत काल के को दर्शाने के लिए 'ब' ध्वनि का प्रयोग किया जाता है, जैसे - रबडबो। जबकि ब्रज में 'औ' ध्वनि का जैसे - गायो, खायो इत्यादि।

अवधी में 'ए' और 'ओ' का उपयोग संध्या अक्षरों के रूप में किया जाता है जैसे - गउना, इत्यादि। जबकि ब्रज में यह प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती।

अवधी और ब्रज में समानता भी है जैसे दोनों वर्णमाला समान है, दोनों में साहित्य का विकास हुआ है। अवधी और ब्रज की अपनी अपनी विशेषताओं के कारण ही ब्रज में शृंगारिक रचनाएँ लिखी गई जबकि अवधी में प्रबंधात्मक औदात्त पूर्ण रचनाएँ अधिक लिखी गई।

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी हिंदी की मुख्य बोलियां - भोजपुरी, मगही और मैथिली है।

भोजपुरी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली है। यह बिहार, छपरा, आरा, उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, बलिया, बस्ती इत्यादि जिलों में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त इसका फिजी, मॉरीशस जैसे देशों में भी विकास हुआ है। भोजपुरी में संज्ञा के तीन रूप मिलते है। भोजपुरी में 'ड़' 'क' 'र' में प्रयोग होता है। जैसे - सड़क > सरक। भोजपुरी में भविष्यकाल के लिए 'ब' ध्वनि का उपयोग किया जाता है। जैसे - खइबो, बैठबो इत्यादि। भोजपुरी संबंध कारक के लिए, केर, केरा, केरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इत्यादि परसर्ग का प्रयोग होता है।

मगही बिहार के पटना, भागलपुर इत्यादि जिलों में बोली जाती है। मगही में भविष्यकाल के लिए 'ल' ध्वनि का प्रयोग किया जाता है। मगही में 'आप' जैसे सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।

मैथिली, बिहारी हिंदी सर्वाधिक विकसित साहित्यिक बोली है। विद्यापति जैसे कवियों ने मैथिली में रचनाएँ की। मधुबन, मिथिला, हजारीबाग इत्यादि मैथिली का क्षेत्र का क्षेत्र है। मैथिली में 'ल' और 'छ' ध्वनि का प्रयोग अधिक किया जाता है। मैथिली में एकवचन से बहुवचन ~~बना~~ बनाने के लिए, हम, अपन, जन इत्यादि का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग किया जाता है। तोर, मोर इत्यादि मैथिली के महत्वपूर्ण सर्वनाम है। मैथिली में लिंग परिवर्तन ~~अविकारी~~ अविकारी है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

~~अपभ्र~~ अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं का निदर्शन, संज्ञा, कारक, सर्वनाम, लिंग, वचन, काल इत्यादि के आधार पर किया जा सकता है।

संज्ञा एवं कारक व्यवस्था

→ अपभ्रंश में निर्विभक्तिक प्रयोग प्रारंभ हो गए।

→ सभी प्रातिपदिक स्वरांत होने लगे जैसे -

जगत् - जग

महान् - महा

→ 'हिं' विभक्ति से ही कर्ता, कर्म, संप्रदान, आपादान का प्रयोग काम चलता रहा। संबंध कारक के लिए, का के इत्यादि का विकास हुआ।

लिंग व्यवस्था →

→ अपभ्रंश में ~~के~~ केवल दो लिंग बचे - स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नपुंसक लिंग समाप्त हो गया। हालाँकि नागर अपभ्रंश में नपुंसक लिंग की देखने को मिलता है।

वचन व्यवस्था →

→ अपभ्रंश में केवल एकवचन एवं बहुवचन दो वचनों का ही प्रयोग किया जाने लगा। द्विवचन को बहुवचन में समाहित कर दिया गया।

सर्वनाम व्यवस्था →

→ सर्वनाम व्यवस्था जटिल बनी रही, किंतु उसमें कुछ नए सर्वनामों का विकास हुआ, जैसे तुम, तुम्हार इत्यादि।

क्रिया व्यवस्था →

→ अपभ्रंश में क्रिया व्यवस्था पालि एवं प्राकृत जैसी ही चलती रही, किंतु उसमें कुछ नई क्रियाओं का विकास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ। जैसे - उट्ठ, बैट्ठ इत्यादि।

काल व्यवस्था ⇒

→ अपभ्रंश में भूतकाल एवं भविष्यकाल के संदर्भ में क्रियाओं का प्रयोग संस्कृत की भांति ही चलता रहा।

7/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

विद्यापति के काव्य में सौंदर्य चेतना को अद्वितीय छटा देखने को मिलती है। उनके काव्य में न तो छायावादियों जैसी वायवीयता है और न ही भक्तिकाल जैसी नैतिकता।

विद्यापति ने सौंदर्य को अपरूप माना है। उनके काव्य में राधा ही नहीं, कृष्ण को भी अपरूप माना गया है। उदाहरण के लिए -
"हे सखि देखल एक अपरूप
सुनइत मानबि सपन सरूप।"

विद्यापति ने सौंदर्य को ऐसी प्राथमिकता दी है, कि जन्म भर देखने के पश्चात भी नयनों को तृप्ति नहीं मिलती है। राधा कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूई कहती हैं –
"जनम अवधि हम रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल।"

अतः स्पष्ट है कि विद्यापति की सौंदर्य चेतना अद्वितीय है। जैसा सौंदर्य का वर्णन विद्यापति ने किया है, वैसी किसी अन्य काव्य में देखने को नहीं मिलता।

5/10

थोड़ा और बेहतर बनाएं
मॉडल उत्तर देखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

मनो विश्लेषणवादी
अज्ञेय, ~~नई~~ कहानी आंदोलन से संबंधित रचनाकार हैं। 'जयदोल', परंपरा, त्रिपथगा, इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानियों में निम्नलिखित शिल्पगत विशेषताएँ देखने को मिलती हैं →

अज्ञेय की कहानियों में कथानक ~~के~~ के टूटने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इसमें कथानक का क्रमिक विकास नहीं होता है।

अज्ञेय की कहानियों में बिंब, प्रतीकों का व्यापक प्रयोग किया है। वस्तुतः नई कहानियों में बात को प्रतीकों के माध्यम से कहा जाता है।

अज्ञेय की भाषा न तो राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद जैसी संस्कृत निष्ठ है और न ही प्रसाद जैसी तत्सम, बल्कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनकी भाषा परिमार्जित एवं लच्छेदारता से मुक्त भाषा है।

अज्ञेय की कहानियां किसी उद्देश्य को लेकर नहीं चलती, बल्कि वह मनोविश्लेषण के आधार पर मन की आंतरिक प्रवृत्तियों को खोलती है।

अतः स्पष्ट है कि अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएं उन्हें एक उत्कृष्ट रचनाकार के रूप में स्थापित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) इप्टा

'इप्टा' की स्थापना 1943 में की गई। इप्टा से भारत के प्रगतिशील लोग जुड़े रहे। वस्तुतः इप्टा ने भारत में रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इप्टा के माध्यम से नाटककारों ने रंगमंच के द्वारा भारत में फासिस्ट शक्तियों पर चोट की तो साथ ही इप्टा से अनेक महान नाटककार जुड़े रहे, जैसे- हनीफ तनवीर, पृथ्वीराज, राजा मुराद, अलका जी इत्यादि।

इप्टा ने भारत में नाटकों के मंचन एवं लेखन को प्रभावी बनाया। इप्टा के कारण ही भारत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में रंगमंच का बड़े पैमाने पर विकास हुआ।

इप्टा आज भी कार्य कर रहा है और नाटकों एवं रंगमंच की प्रगतिशीलता के लिए अग्रसर है। इप्टा भारत में रंगमंच के विकास में योगदान देने वाली महत्वपूर्ण संस्था है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

'अकहानी आंदोलन' फ्रांस के 'एन्टी स्टोरी मूवमेंट' से प्रभावित होकर प्रारंभ हुआ। रवींद्र कालिया की 'नौ वर्ष छोटी पत्नी', दूधनाथ सिंह की 'रीढ़', इत्यादि इस काल की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। अकहानी आंदोलन की निम्नलिखित विशेषताएं हैं -

मूल्यों का त्याग - अकहानी आंदोलन मूल्यों का त्याग कर देता है। वस्तुतः इस काल की रचनाओं में मूल्यों को कोई महत्व नहीं दिया जाता, जिससे इनमें अजनबीपन, दुःख, अकेलापन इत्यादि का वर्णन मिलता है।

परंपराओं का निषेध - इस आंदोलन के रचनाकार परंपराओं का पूर्णतः नकार देते हैं।

अतिशय आधुनिकता - इस काल के रचनाकार अतिशय आधुनिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर बल देते हैं। जिससे इनमें नैतिक मूल्यों का ह्रास शहरीकरण अकेलापन आदि का वर्णन मिलता है।

यौन उन्मुक्तता ⇒ अकहानियों में यौन चेतना का व्यापक वर्णन मिलता है। वस्तुतः समलैंगिक संबंधों एवं पशु - पक्षियों के बीच के यौन संबंधों को भी दर्शाया गया है।

शिल्पगत अमूर्तता ⇒ अकहानी में शिल्प को प्राथमिकता नहीं दी जाती। न तो उन्होंने प्राचीन शिल्प को स्वीकार किया और न ही नवीन शिल्प का सृजन किया।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) नाटककार रामकुमार वर्मा

प्रसाद के पश्चात छिन्न - भिन्न हो रही सांस्कृति राष्ट्रीय धारा को रामकुमार वर्मा ने विस्तारित किया। वस्तुतः रामकुमार वर्मा भी चरित्र की घटनाओं को लेकर रचनाएँ करते हैं और आम जन में राष्ट्रीय - सांस्कृतिक अवधारणा का प्रसार करते हैं।

रामकुमार वर्मा के प्रमुख नाटक हैं - 'शिवाजी', 'तुलसीदास' 'कौमुदी महोत्सव' इत्यादि। प्रमुख हैं। इन्होंने शिवाजी में शिवाजी के कुछ गुणों को लेकर लोगों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करना। इसी प्रकार ~~इन्होंने~~ 'कौमुदी महोत्सव' में इन्होंने चन्द्रगुप्त के दुर्बल चरित्र में भी कुछ अच्छे तत्वों का वर्णन किया।

रामकुमार वर्मा ने राष्ट्रीय - सांस्कृति नाटकों की रचना के अलावा सामाजिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाटकों की रचना भी की। इसके अतिरिक्त इनका महत्वपूर्ण योगदान 'एकांकी' लेखन में है। एकांकी से तात्पर्य लघु नाटक से होता है। 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई' इनकी प्रमुख एकांकी हैं।

इनके नाटक मंचन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने भाषा, रंग-संकेत, ध्वनि-संकेत का स्पष्ट उल्लेख किया है।

6/10

Good

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कोणार्क नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कोणार्क' 'जगदीशचन्द्र माथुर' का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है महत्वपूर्ण नाटक है। कोणार्क की ऐतिहासिक कथावस्तु 'उत्कल' क्षेत्र के प्रतापी राजा 'नरसिंह देव' के कोणार्क मंदिर से ली गई है। इसके अतिरिक्त 'विशु' एवं 'धर्मपद' के माध्यम से नाटक में कल्पनाओं का समावेश किया गया है।

कोणार्क में संघर्ष का वर्णन मिलता है, जो कि तीन स्तरों पर दिखता है-

- सर्जना और विध्वंस का द्वंद्व
- राजसत्ता और आम जन का द्वंद्व।
- कलाकार की कला एवं निजी लाभ के बीच द्वंद्व।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोणार्क कलाकार के माध्यम से जो देव दिखाया गया है, वह आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान में कलाकार प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए किसी भी स्तर तक जाने के लिए तैयार है।

कोणार्क में 'विशु' और 'धर्मपद' वीरता का प्रदर्शन करते हुए राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देते हैं, जो उनके त्याग को स्पष्ट करता है।

कोणार्क रंगमंचीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसमें रंग-संकेत, ध्वनि-संकेत बड़ी मात्रा में दिए गए हैं, उदाहरण के लिए- "भीने अंधकार में कोणार्क का खण्डहर दिखाई पड़ रहा है, सम्मिलित वाद्यों की ध्वनि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाटककार ने मंचन की जटिलता को कम करने के लिए संवादों से छोटा एवं ~~स्पष्ट~~ स्पष्ट वर्णन किया एवं भाषा - शैली भी सरल रखी। उदाहरण के लिए -

"विश्व मूर्ति के सामने अकेला मूर्ति को संबोधित करते हुए। उसके प्रत्येक वाक्य में उसकी निजी सत्ता है। प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर अल्प विराम।"

अतः स्पष्ट है कि कोणार्क नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

12/20

Good

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु के योगदान पर प्रकाश डालिए। 30

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाभादास ⇒ नाभादास का साहित्येतिहास लेखन में महत्पूर्ण योगदान है। इनकी पुस्तक 'भक्तमाल' में 214 छंद मिलते हैं, जिसमें लगभग 200 कवियों का वर्णन मिलता है।

वस्तुतः नाभादास ने यह रचना अपने शिष्यों के अद्भुत एवं चमत्कारपूर्ण वर्णन करने के लिए की लिखी। इसमें नानक, पीपा, धन्ना, दादू, कबीर, सूर, तुलसीदास इत्यादि के बारे में जानकारी मिलती है।

इसमें केवल कवियों के बारे में ही जानकारी नहीं मिलती बल्कि इसमें उनकी रचनाओं के बारे में भी जानकारी मिलती है।

भक्तमाल केवल साहित्येतिहास लेखन की दृष्टि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। नाभादास ने ही सर्वप्रथम कवियों की जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया। अतः उनका हिंदी साहित्येतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है।

जॉर्ज ग्रियर्सन ⇒ ग्रियर्सन फ्रांसीसी विद्वान थे। इन्होंने मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ नॉदर्न हिंदुस्तान, लिखी। इनमें इन्होंने कवियों का कालक्रमानुसार संकलन, काल विभाजन और नामकरण करने का सफल प्रयास किया।

ग्रियर्सन ने कवियों का संकलन वर्ण क्रम के अनुसार नहीं बल्कि काल क्रमानुसार किया।

ग्रियर्सन ने हिंद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपनी रचना में वैज्ञानिक पद्धति को भी समाहित किया वस्तुतः जहाँ भी इन्होंने किसी तथ्य का वर्णन किया, उसके संबंध में नीचे पाद टिप्पणी दी। इस कारण इनकी पुस्तक में प्रामाणिकता झलकती है।

ग्रियर्सन ने हिंदी साहित्य को उर्दू, फारसी इत्यादि भिन्न माना, जिस कारण ही हिंदी साहित्य का विकास हुआ।

ग्रियर्सन के द्वारा प्रदान की गई कुछ सूचनाएँ आज भी महत्वपूर्ण हैं। जैसे 'सुंदरी तिलक' नामक पत्र के बारे में जानकारी, पृथ्वीराज, राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद, लक्ष्मण सिंह इत्यादि के बारे में उनके द्वारा प्रदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की गई जानकारी आज भी महत्वपूर्ण है।

ग्रियर्सन ने ही सर्वप्रथम संत साहित्य को स्वर्ण काल की संज्ञा दी, जो आज भी प्रामाणिक एवं स्वीकार है।

किंतु ग्रियर्सन की कुछ सीमाएँ भी हैं, जैसे- साम्राज्यवादी दृष्टिकोण, यादृच्छिक आधार पर काल विभाजन एवं नामकरण, भक्तिकाल के बीज ईसाईयत में खोजना इत्यादि। किंतु उनका हिंदी साहित्येतिहास लेखन में अविस्मरणीय योगदान है।

मिश्रबंधु ⇒ मिश्रबंधुओं ने हिंदी साहित्येतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने 'मिश्रबंधु विनोद' नामक रचना लिखी, जिसमें उन्होंने 3000 से अधिक लेखकों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बारे में जानकारी दी।
उन्होंने काल विभाजन एवं नामकरण का प्रयास किया। उन्होंने हिंदी को आठ कालों में विभाजित किया - ~~आरंभ~~ प्रारंभिक काल, पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल इत्यादि।

मिश्रबंधुओं ने भी काल विभाजन एवं नामकरण में वैज्ञानिक शैली नहीं अपनाई और यादृच्छिक आधार पर काल विभाजन किया।

किंतु उनका हिंदी साहित्येतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है। शुक्ल जी ने मिश्रबंधुओं के बाद कवियों के बारे में दी जानकारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब भी ~~मुझे~~ मुझे किसी लेखक के बारे में जानकारी की आवश्यकता होती है, तो मैं मिश्रबंधु विनोद से सहायता लेता हूँ।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूफी दर्शन मुख्यत: सूफियों से संबंधित है। सूफी दर्शन में 'तसव्वुफ' को जीवन का उद्देश्य माना जाता है। इसमें व्यक्ति इश्क मजाजी से इश्क हकीकी को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

सूफी दर्शन में भावनात्मक रहस्यवाद को प्रमुखता दी जाती है। वस्तुत: ~~सूफी~~ मुस्लिम धर्म में ईश्वर की आराधना मना है अत: ये भावनात्मक रहस्यवाद द्वारा जीव - ईश्वर के एकत्व को महत्व देते हैं। उदाहरण ~~के लिए~~ जायसी का पदमावत में कथन -

"गढ़ तस बांक जैसी तोरी काया,
दसं द्वार ताल कै लेखा,
उलटि दिष्ट जो डारै, सो द्वार को लेखा।"

सूफी दर्शन में 'प्रेम' को अत्यधिक महत्व दिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाता है। वस्तुतः सूफी प्रेम के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं, इसलिए इनके दर्शन में प्रेम को महत्व ~~दिया~~ दिया जाता है। उदाहरण के लिए -

"तलफै बिन बालम मोर जिया,
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया,
तलफ - तलफ के भोर किया।"

सूफी ब्रह्म - जीव के एकत्व को जीवन का उद्देश्य मानते हैं। अमीर खुसरो के काव्य का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"खुसरो रैन सुहाग की जागी
पी के संग
तन मेरो, मन पियु को,
दोउ भए एक रंग।"

सूफी दर्शन में गुरु का बड़ा महत्व है। वस्तुतः ये मानते हैं कि

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कि गुरु के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए - "गुरु हुआ जेई पंथ दिखावा, बिनु गुरु सब निरगुन पावा।"

सूफी दर्शन में नारी त्याज्य नहीं माना गया बल्कि वहाँ नारी को ईश्वर का रूप दिया गया है। जायसी के पद्मावत में पद्मावत को ईश्वर का रूप माना गया है।

भारत में सूफी दर्शन में योग का भी समन्वय देखने को मिलता है, तो साथ ही सूफी भारत के ब्रह्म - जीव के एकत्व के दर्शन से भी प्रभावित नजर आते हैं।

अतः स्पष्ट है कि सूफियों का दर्शन व्यापक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

9/2/20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

था और उन्होंने ब्रह्म - जीव के जीवन का मुख्य अंग घोषित किया।

और बेहतर बनाएं। मॉडल उत्तर देखें।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती हिंदी के 'नई कहानी' आंदोलन की महत्वपूर्ण रचनाकार है। उनकी ~~कहानी~~ 'बदली बरस गई', 'डार से बिछुरी', 'मित्रो मरजानी' इत्यादि रचनाओं ने हिंदी साहित्य में हलचल पैदा कर दी, जिसकी आहट आज तक सुनाई देती है।

कृष्णा सोबती का सबसे महत्वपूर्ण योगदान भाषा के स्तर पर है। सोबती ने 'पंजाबी मिश्रित हिंदी' का अपनी रचनाओं में प्रयोग किया। उन्होंने इस भाषा के माध्यम से पाठक के साथ गहरा जुड़ाव स्थापित किया। उदाहरण के लिए – "उनकी आँखों-सी आँखें नहीं देखी"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती ने हिंदी साहित्य में नारी को मूल्य केंद्र में स्थापित किया। वस्तुतः 'सिमोन दी बोउवा' ने जो सैद्धांतिक स्तर पर जो नारीवादी ~~आंदो~~ आंदोलन के लिए जो कार्य किया, वही हिंदी साहित्य में कृष्णा सोबती ने किया। 'आजादी सम्मोजान की', 'बदरी बरस गई' में सोबती ने नारी स्वतंत्रता की वकालत की।

कृष्णा सोबती ने नैतिकता को यौन इच्छाओं से भिन्न दर्शाया। वस्तुतः 'मित्रो मरजानी' की नायिका अनेक सामाजिक वर्जनाओं को सहती हुई अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अतः स्पष्ट है कि कृष्णा सोबती की भाषा-शैली एवं ~~सेव~~ संवेदना दोनों स्तर पर ही हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान है।

5/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद का समस्या प्रधान नाटक है। वस्तुतः प्रसाद जी वे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर समस्याओं को उठाया और उनका समाधान प्रस्तुत किया।

प्रसाद जी ने ध्रुव-स्वामिनी में 'ध्रुवस्वामिनी' के माध्यम से नायिका के 'वरण की स्वतंत्रता' का प्रश्न उठाया। उनका मानना था कि यदि किसी नारी का किसी अयोग्य पुरुष से विवाह हो जाए, तो उसे मोक्ष का अधिकार होना चाहिए।

दूसरी समस्या उन्होंने अयोग्य राजा से संबंधित उठाई। उन्होंने प्रश्न उठाया कि यदि कोई अयोग्य व्यक्ति राजा बन जाता है, तो क्या उसे हटाया जा सकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है, । प्रसाद जी ने नाटक में है इसका समाधान स्पष्ट करते हुए कहा कि मंत्रिपरिषद को उसे हटाने का अधिकार होना चाहिए।

प्रसाद का यह नाटक मंचन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसमें केवल 'तीन दृश्य' हैं और इसके लिए किसी अन्य मंच आवश्यकता नहीं है। बल्कि यवनिका और दो पर्दों के माध्यम से इसका मंचन संभव है। इसमें पात्रों के लिए भी ज्यादा व्यक्तियों की आवश्यकता नहीं है। रंग-संकेत, ध्वनि-संकेत, एवं स्पष्ट भाषा इत्यादि का भी वर्णन किया है।

इस नाटक के माध्यम से प्रसाद जी ने जहाँ नारी स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी, तो वहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रंगमंचीय संबंधी जटिलताओं को भी सीमित करते हुए इसे रंगमंच के लिए उपयोगी बनाया।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation